Naveen Shodh Sansar (An International Refereed / Peer Review Multidisciplinary Research Journal)
RNI No.- MPHIN/2013/60638, ISSN 2320-8767, E- ISSN 2394-3793, Scientific Journal Impact Factor (SJIF)- 8.054,
July to September 2026, E-Journal, Vol. I, Issue LV (55), ISO 9001:2015 - E2024049304 (QMS)

पद्म पुराणीय जल-तीर्थ : समकालीन पर्यावरणीय प्रासंगिकता

सुरेश कुमार मीणा*

* शोधार्थी (संस्कृत) मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर (राज.) भारत

शोध सारांश – भारतीय संस्कृति में पुराण केवल धार्मिक आख्यान न होकर प्रागैतिहासिक एवं ऐतिहासिक काल के पारिस्थितिकीय कोष हैं। अष्टादश महापुराणों में वैष्णव परम्परा का प्रमुख ग्रन्थ पद्म पुराण जल-संरक्षण, वनीकरण, मृदा संरक्षण तथा नदियों-जलाशयों की स्वच्छता को धर्म तथा मोक्ष से जोड़कर प्रस्तुत करता है। वर्तमान समय में वैश्विक स्तर पर गहराते जल-संकट, नदियों के प्रदूषण तथा जलवायु परिवर्तन जैसी पारिस्थितिकीय चुनौतियों के परिप्रेक्ष्य में पद्म पुराण में प्रतिपादित 'तीर्थ-अवधारणा' केवल आध्यात्मिक न होकर जल-पारिस्थितिकी के संरक्षण की एक सुदृढ़ व्यावहारिक नीति प्रस्तुत करती है। प्रस्तुत शोध पत्र पद्म पुराण के विभिन्न खण्डों में वर्णित नदी एवं जलाशय तीर्थों के पौराणिक साक्ष्यों का विश्लेषण करते हुए उनकी समकालीन पर्यावरणीय प्रासंगिकता को रेखांकित करता है।

शब्द कुंजी – पद्म पुराण, जल-तीर्थ, पारिस्थितिकी तन्त्र, जल-संरक्षण, पूर्त धर्म तथा समकालीन प्रासंगिकता।

प्रस्तावना – आधुनिक औद्योगिक एवं तकनीकी युग में मानव जाति जिस गम्भीर पर्यावरण संकट का सामना कर रही है, उसका मूल कारण प्रकृति के प्रति संकुचित उपभोगवादी दृष्टिकोण है। इसके विपरीत, प्राचीन भारतीय वैदिक एवं पौराणिक परम्परा में पर्यावरण को उपभोग योग्य वस्तु न मानकर 'माता' तथा 'देवता' के रूप में पूजनीय एवं जीवनदायिनी शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित किया गया है।

पद्म पुराण, जो अष्टादश महापुराणों में अत्यन्त बृहद् एवं महत्त्वपूर्ण माना जाता है। इसमें प्रकृति संरक्षण को मानव कर्त्तव्य के मुख्य केन्द्र में रखा गया है। पद्म पुराण के विभिन्न खण्डों में वर्णित तीर्थ यात्रा का उद्देश्य केवल आत्म-शुद्धि या पारलौकिक फल प्राप्ति तक सीमित नहीं है, अपितु वह प्राकृतिक संसाधनों, विशेष रूप से जल तथा वनस्पति के संरक्षण का एक सामाजिक- सांस्कृतिक संकल्प पत्र प्रस्तुत करता है।[1]

पद्म पुराण में तीर्थों का वर्गीकरण एवं पारिभाषिक संरचना : पद्म पुराण के अनुसार तीर्थ केवल भौगोलिक स्थल मात्र नहीं हैं, अपितु वे संचेतना के केन्द्र हैं। पद्म पुराण में तीर्थों को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया हैं-

1. **स्थावर तीर्थ** : नदी, वन, पर्वत, जलाशय, सरोवर, कुण्ड तथा कुएँ।
2. **जंगम तीर्थ** : ज्ञानी पुरुष, सन्त तथा शुद्ध आचरण से युक्त मनुष्य।
3. **मानस तीर्थ** : सत्य, शौच, दया, क्षमा तथा इन्द्रिय निग्रह इत्यादि।

स्थावर तीर्थों के अन्तर्गत इस पुराण में जल स्त्रोतों को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। जल-स्त्रोतों को 'तीर्थ' घोषित करने का मुख्य ध्येय जन-सामान्य के मन में उनके प्रति पवित्रता का भाव जगाना था जिससे वे मानवीय प्रदूषण से मुक्त रह सकें।[2] पद्म पुराण में गङ्गा, यमुना, सरस्वती, कावेरी, नर्मदा तथा गोदावरी जैसी प्रमुख नदियों के अतिरिक्त अनेक स्थानीय नदियों के पारिस्थितिकीय महत्त्व का वर्णन है। नदियों के तटों को 'पापनाशक' कहने के पीछे मुख्य उद्देश्य जल की अविरलता तथा निर्मलता को बनाए रखना था-

क्षितौ भावयतो मर्त्यान्नागांस्तारयतेप्यधः।
दिवि तारयते देवान् गंगात्रिपथगास्मृता।।[3]

अर्थात् त्रिपथगामिनी गङ्गा जी पृथ्वी लोक पर अपने भक्त मानव को, पाताल में नागों को तथा स्वर्ग में देवताओं को तारती हैं। पद्म पुराण में कश्यप हद, पुष्कर सरोवर तथा राधा कुण्ड जैसे विभिन्न जलाशयों का विस्तृत वर्णन मिलता है। जलाशयों का निर्माण तथा उनका जीर्णोद्धार इस पुराण में 'पूर्त धर्म' के अन्तर्गत महान पुण्य का कार्य माना गया है। कुण्ड, सरोवर एवं तड़ाग न केवल तीर्थस्थल थे, अपितु जनजीवन के अभिन्न अंग भी थे। इनके माध्यम से पर्यावरणीय सन्तुलन एवं जल संरक्षण की भावना को भी बल मिला, जो आज के सन्दर्भ में अत्यन्त प्रासंगिक है। पद्म पुराण में जलाशयों की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए बताया गया है कि-

पानीयदानं परमं दानानामुत्तमं सदा।
तस्माद्वापीश्च कूपांश्च तड़ागानि च कारयेत्।।[4]

इस संसार में जल का दान श्रेष्ठ तथा सभी दानों में उत्तम है। अतएव वापी, कूप तथा तड़ाग का निर्माण करना चाहिए।

पद्म पुराण में जल-पारिस्थितिकी एवं पूर्त धर्म पद्म पुराण में समाज कल्याणकारी कार्यों को 'पूर्त धर्म' के अन्तर्गत रखा गया है। वापी (बावड़ी), कूप, तड़ाग तथा जलाशयों का निर्माण कराना यज्ञानुष्ठानों से भी अधिक पुण्यदायी माना गया है-

तस्मात्सर्वप्रयत्नेन वापीकूपतटाककम्।
कारयेच्च बलैः सर्वैस्तथा सर्वधनेन च।।
ततो विनिर्जले देशे यो ददाति जलाशयम्।
वासरे वासरे तस्य कल्पं स्वर्गविनिर्दिशेत्।।[5]

अर्थात् हर तरह का प्रयास करके वापी, कूप तथा तड़ाग का निर्माण कराना चाहिए तथा सम्पूर्ण बल एवं धन लगाकर इन सभी का निर्माण करना चाहिए क्योंकि जल रहित स्थान में जो जलाशय का दान करता है, उसको

प्रत्येक दिन एक-एक कल्प तक का स्वर्ग प्राप्त होता है।

पद्म पुराण में स्पष्ट उल्लेख है कि जो व्यक्ति ग्रीष्म ऋतु में जीवों के पीने के लिए जल का प्रबन्ध करता है अथवा नए तालाब बनवाता है, वह अक्षय लोक को प्राप्त करता है। यह दृष्टिकोण तत्कालीन समय में जल-सुरक्षा तथा भूजल पुनर्भरण की दूरदर्शी सोच को दर्शाता है।[6]

पर्यावरण संरक्षण के पौराणिक साक्ष्य एवं वर्तमान प्रासंगिकता : पद्म पुराण में नदियों एवं जलाशयों में गन्दगी फैलाने, मल-मूल त्यागने तथा कचरा फेंकने को महापाप माना गया है-

नदीतीरेषु यः कुर्यान्मलोत्सर्गं विमोहितः।
स याति नरकं घोरं यावच्चन्द्रदिवाकरौ॥[7]

इसी सन्दर्भ में यहाँ बताया गया है कि -

अमेध्यं श्लेष्ममूत्रं वा पुरीषं वा समुद्रजे।
नदीषु न प्रक्षिपेज्प्राज्ञो जलं ह्योधाय जीवनम्॥[8]

अर्थात् बुद्धिमान मनुष्य को चाहिए कि वह नदियों, सागरों एवं जल-स्त्रोतों में गन्दगी, कफ, मूत्र अथवा मल का विसर्जन न करे क्योंकि जल ही समस्त प्राणियों के जीवन का संवर्धन एवं संरक्षण करने वाला आधार है।

आज जब हमारी नदियाँ औद्योगिक कचरे तथा सीवरेज के कारण दम तोड़ रही हैं, तब पद्म पुराण का यह आचारशास्त्र हमें नदियों को मात्र 'जल-सप्लाई की पाइपलाइन' न मानकर जीवन्त पारिस्थितिकी तन्त्र मानने की प्रेरणा देता है।[9] ये पद्य नदियों में औद्योगिक अपशिष्ट एवं सीवेज प्रदूषण को रोकने से सम्बन्धित आधुनिक पर्यावरण संरक्षण अधिनियमों के शास्त्रीय मूल प्रस्तुत करते है। 'नमामि गंङ्गे' तथा राष्ट्रीय नदी संरक्षण योजनाओं के सफल कार्यान्वयन हेतु यह नैतिक दृष्टि अत्यावश्यक है।

पद्म पुराण में वृक्षारोपण को तीर्थ यात्रा के समान फलदायी बताया गया है। विशेषत: जल-स्त्रोतों के समीप पीपल, बरगद, नीम तथा जल-शोधक वृक्षों को लगाने पर बल दिया गया है।

दशकूपसमा वापी दशवापीसमो ह्रदः।
दशह्रदसमः पुत्रो दशपुत्रसमो द्रुमः॥[10]

अर्थात् दस कुएँ खोदने का जो पुण्य है, वह एक वापी (बावड़ी) के निर्माण से मिलता है। दस बावड़ियों का पुण्य एक बड़े सरोवर (ह्रद/झील) के निर्माण से मिलता है। दस सरोवरों के निर्माण का फल एक उत्तम पुत्र की प्राप्ति से मिलता है तथा दस पुत्रों के पालन से मिलने वाला पुण्य केवल एक वृक्ष लगाने तथा उसका संवर्धन करने से प्राप्त होता है। यह वनीकरण को जल-संरक्षण तथा मानव-सन्तति से भी अधिक उच्च प्राथमिकता देता है। इसी सन्दर्भ में आगे बताया गया है कि-

अश्वत्थमेकं पिचुमन्दमेकं न्यग्रोधमेकं।
दशपुष्पजातीः रोपेत्तु यः सोऽपि न याति दुर्गम्॥[11]

अर्थात् जो मनुष्य एक पीपल, एक नीम, एक बरगद तथा दस पुष्प वाले पौधे लगाता है, उसका जीवन कभी संकटग्रस्त नहीं होता।

आधुनिक जल-प्रबन्धन तथा भू-विज्ञान के अनुसार नदियों के तटों पर वृक्ष लगाने से मृदा अपरदन रुकता है, जल की वाष्पीकरण दर घटती है तथा भूजल स्तर में वृद्धि होती है।[12]

समकालीन जल-संकट तथा पद्म पुराण की प्रासंगिकता : वर्तमान समय में संयुक्त राष्ट्र तथा नीति आयोग की रिपोर्टों के अनुसार, भारत सहित पूरा विश्व 'जल-तनाव' से गुजर रहा है। पद्म पुराण की तीर्थ अवधारणा निम्नलिखित बिन्दुओं के माध्यम से इस समस्या का समाधान प्रस्तुत करती है-

1. पद्म पुराण में प्रत्येक गाँव तथा नगर में कूप, बावड़ी तथा तालाब बनाने पर बल दिया गया है, जो आज के रेनवाटर हार्वेस्टिंग (Rainwater Harvesting) का प्राचीन रूप है।
2. केवल कठोर कानून बनाकर जल-संरक्षण सम्भव नहीं है। जब तक जल के प्रति आध्यात्मिक तथा नैतिक भाव नहीं जागेगा, तब तक जन-भागीदारी सम्भव नहीं है।
3. तीर्थ स्थलों के आसपास के वनों (यथा वृन्दावन, नैमिषारण्य) को अभ्यारण्य के रूप में रक्षित रखा जाता था, जहाँ जीवों का वध वर्जित था।

निष्कर्ष : पद्म पुराण में वर्णित तीर्थ केवल धार्मिक आस्था के केन्द्र नहीं हैं, अपितु वे प्राचीन भारत की जल-प्रबन्धन तथा पर्यावरण-संरक्षण प्रणाली के स्तम्भ हैं। आज के उपभोक्तावादी युग में केवल कानूनी प्रावधानों द्वारा जल संरक्षण सम्भव नहीं है, जब तक जल के प्रति सांस्कृतिक तथा नैतिक निष्ठा पुन: जागृत नहीं होगी, तब तक नदियाँ तथा जलाशय सुरक्षित नहीं रह सकते। जब हम पद्म पुराण के सृष्टि, भूमि तथा उत्तर खण्ड के अनुच्छेदों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करते हैं तो स्पष्ट होता है कि पौराणिक ऋषियों ने 'तीर्थ' के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग की एक जन-कल्याणकारी नीति तैयार की थी।

पद्म पुराण की तीर्थ-अवधारणा को आधुनिक पर्यावरण शास्त्र से जोड़कर देखने पर यह स्पष्ट होता है कि ये पौराणिक साक्ष्य आज भी पर्यावरणीय संकट के निवारण हेतु उतने ही प्रासंगिक तथा व्याावहारिक हैं जितने प्राचीन काल में थे। आज के उपभोक्तावादी तथा पारिस्थितिकीय संकट से घिरे युग में पद्म पुराण का यह सन्देश कि 'जल ही जीवन तथा धर्म का आधार है' अत्यन्त व्यावहारिक एवं प्रासंगिक है। यह अध्ययन सिद्ध करता है कि पौराणिक जल-तीर्थ परम्परा का पुनर्जागरण ही समकालीन जल-संकट का स्थायी समाधान बन सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची :-

1. बलदेव उपाध्याय : पुराण विमर्श, चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, 2015, पृ. 180-185
2. उमेश चन्द्र जोशी : भारतीय संस्कृति में पर्यावरण चेतना और पुराण, आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली, 2016, पृ. 92-98
3. श्रीपद्ममहापुराणम्, सृष्टिखण्ड, सम्पादक एवं टीकाकर - शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य), चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 2016, अध्याय-62, श्लोक 52-53
4. श्रीपद्म महापुराणम्, उत्तरखण्ड, सम्पादक एवं टीकाकार-शिवप्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य), चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी, 2016, अध्याय-28, श्लोक-01
5. श्रीपद्ममहापुराणम्, सृष्टि खण्ड, सम्पादक एवं टीकाकर शिव प्रसाद द्विवेदी (श्रीधराचार्य) चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन वाराणसी, 2016, अध्याय-57, श्लोक-9-10
6. रामकरण शर्मा : वैष्णव पुराणों में जल-संरक्षण एवं तीर्थ परम्परा, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2021, पृ. 142-150
7. पद्म पुराण, भूमिखण्ड, गीताप्रेस गोरखपुर, संवत 2078, अध्याय-18, श्लोक-23, पृ. 210

8. पद्म पुराण, भूमिखण्ड, अनुवादक एवं सम्पादक – श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान बरेली, 2018, अध्याय – 32, श्लोक–14, पृ. 235
9. Vandana Shiva : Water wars : Pollution, Profits and Privatization, Pluto Press, London, 2002, P.P 45-50
10. पदम् पुराण, सृष्टि खण्ड, अनुवादक एवं सम्पादक – श्रीराम शर्मा आचार्य, संस्कृति संस्थान बरेली, 2018, अध्याय – 59, श्लोक–18, पृ. 242
11. पद्म पुराण, उत्तरखण्ड, गीताप्रेस गोरखपुर, भाग–4, अध्याय– 227, श्लोक–55, पृ. 482
12. D.P. Agrawal : Ancient Metal and Water Technology in India, Aryan Books International, New Delhi, 2007, PP. - 115-122

****